2024

ISSN 2231-1041

# स्तोम
# STOM

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका
UGC-Care enlisted Peer Reviewed Annual Research Journal
वर्ष-24, विशेषांक-1 / Year-24, Special Issue-1

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

ISSN 2231-1041

# स्तोम

## कलाभिव्यक्ति का माध्यम

(यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका)

वर्ष-24, विशेषांक-1

2024

**संस्थापक**
चन्द्र किशोर सिंह, अधिवक्ता

**आदि मुद्रक**
श्यामा सिंह

**प्रबन्ध सम्पादक**
डॉ० कुमार विमल मोहन सिंह
डॉ० कुमार निर्मल मोहन सिंह

**प्रकाशक**
'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

**मुद्रक**
कुमार प्रिन्टर्स,
लाह बाजार, छपरा-841301

**पत्राचार का पता**
प्रो० लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
फ्लैट नं०- 108
न्यू टीचर्स फ्लैट
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा (बिहार)
**मोबाईल नं० :** 9835296330
**ई-मेल :** editor.stomresearchjournal@gmail.com

सहयोग राशि- **425/-**

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी संगीतसेवी अवैतनिक हैं ।

लेखकों के विचार से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं है ।

**प्रधान सम्पादक**
**प्रो० लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'**

**सह सम्पादक**
**डॉ० कुमार विनय मोहन सिंह**

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

# स्तोम

## कलाभिव्यक्ति का माध्यम

**( यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका )**

**सलाहकार मण्डल :**
प्रो० पंकजमाला शर्मा
प्रो० द्वारम वी.जे. लक्ष्मी
विदुषी काजल शर्मा
प्रो० दर्शन पुरोहित
प्रो० के० शशि कुमार

**सम्पादक मण्डल :**
प्रो० संगीता पण्डित
प्रो० बी० राधा
डॉ० विधि नागर
डॉ० अनीता शिवगुलाम
डॉ० हिमांशु द्विवेदी

**सहयोगी मण्डल :**
प्रो० अर्चना अम्भोरे
प्रो० निशा झा
डॉ० राजश्री रामकृष्ण
डॉ० बिन्दु के०
डॉ० आरती एन० राव
डॉ० अरविन्द कुमार
डॉ० ज्योति सिन्हा
डॉ० मधुरानी शुक्ला
डॉ० अवधेश प्रताप सिंह तोमर
डॉ० रवि जोशी
डॉ० शिखा समैया
डॉ० अमित कुमार पाण्डेय

# शिवम्–सरगम

आङ्गिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्ववाङ्मयम् ।
आहार्यं चन्द्रतारादि तं नुमः सात्विकं शिवम् ।।

नृत् कला की इस दुनिया में,
है अपना नया कदम ।
जहाँ सुर का संगम होता,
वो सरगम बना शिवम् ।।

लेकर हम चाँद सितारे
आपस में प्रीत सँवारे ।
प्रीत के इस मंदिर में,
नित शीष झुकाते हैं हम ।।

संगीत हो मन्त्र हमारा,
अभिनय हो शस्त्र हमारा ।
हम नेक, एक, जग जीते,
यही नाद सुनाते हैं हम ।।

हो विकसित जग में कलायें,
संस्कृति की अलख जगाएँ ।
यही भावना हमारी,
यही लक्ष्य बनाते हैं, हम ।

मूल रचना : रविभूषण 'हँसमुख'
परिकल्पना : विनय मोहन 'वीनू'
संगीत : लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'

# सम्पादकीय...

कार्तिक मास का बहुत माहात्म्य है । इस माह में अनेक व्रत, पर्व–त्योहार आते हैं– दीपावली, भाईदूज, गोवर्धन पूजा, सूर्य षष्ठी, एकादशी (देवोत्थान), सामा–चकेवा, गंगा–स्नान आदि । इन पर्वों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूर्य–उपासना का पर्व 'सूर्य षष्ठी' अथवा छठ–पर्व या छठ व्रत है । हमारी संस्कृति में प्रकृति के उपासना की अद्‌भुत विशेषता है । सूर्य–उपासना की यह परम्परा लगभग 4000 वर्ष पहले (पूर्व वैदिक 1500 ई० पूर्व प्राचीन) से है । सूर्य के प्रतिमा–निर्माण की परम्परा पाँचवीं शताब्दी अर्थात् गुप्त काल में आरम्भ हुई । कार्तिक मास के शुक्ल षष्ठी को अस्ताचल और सप्तमी को उदयाचल सूर्य को अर्घ्य देकर आराधना करते हैं । अस्ताचल और उदयस्थ सूर्य–पूजा की परम्परा महाभारत काल से मानी जाती है । अंगराज कर्ण को इस परम्परा के पुरोधा के रूप में पूजा जाता है । सूर्य समस्त ऊर्जा के स्रोत हैं । प्राकृतिक सम्पदाओं, वनस्पतियों को सर्वाधिक नजदीक ले जाने का कार्य करता है सूर्य–षष्ठी का व्रत; यथा–फल, फूल, नदी, वृक्ष, वायु, सूर्य आदि । यह सामूहिकता का मार्ग प्रशस्त करता है जिसमें सभी जाति–धर्म के मानव की सहभागिता होती है । भगवान सूर्य ऋग्वैदिक काल के देवता हैं । वैदिक काल में 'मित्र' संज्ञा सूर्य का ही पर्याय है । पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि सूर्य–उपासना का आरंभ प्रागैतिहासिक काल में हुआ । सिन्धु घाटी की सभ्यता में प्राप्त मुहरों को सूर्य का ही प्रतीक माना गया है । वेदों में यज्ञ के प्रसंग में सूर्योपासना का वर्णन मिलता है । मानव–रूप में सूर्य का सर्वोधिक प्राचीन प्रथम अंकन मौर्यकालीन 'मुहर' है । इस पर सूर्य चार घोड़ों वाले रथ पर सवार हैं । द्वितीय मानव–आकृति का अंकन शुंगकालीन (185 ई.पू.–73 ई.पू.) चन्द्रकेतु गढ़ में प्राप्त होता है जिसमें मिट्‌ठी की गाड़ी पर सूर्य स्थापित वा आसीन हैं । एक अन्य प्रमाण यह है कि बोधगया के स्तम्भ पर सूर्य का अंकन किया गया है जिसमें सूर्य एक पहिया वाले रथ पर आरूढ़ हैं जिसे चार घोड़े खींच रहे हैं । इस पर अगल–बगल में उषा और प्रत्युषा भी दृष्टिगोचर होती हैं । सूर्य की शक्ति का मुख्य स्रोत उनकी पत्नी उषा और प्रत्युषा हैं जिसकी संयुक्त आराधना इस व्रत में होती है । सायंकालीन प्रथम अर्घ्य में सूर्य के अन्तिम किरण प्रत्युषा तथा तदुपरान्त उदीयमान सूर्य की किरण उषा को अर्घ्य देकर आराधना करते हैं । मुल्तान (पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का दक्षिणी भाग) में सूर्य–मंदिर सूर्य–उपासना का प्रमुख केन्द्र था । आज यह खण्डहर बन चुका है । चन्द्रभागा नदी के तट पर अवस्थित मुल्तान के इस सूर्य मन्दिर का उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग ने किया है । इस मन्दिर का वर्णन स्कन्दपुराण में भी है । ग्रीक एडमिरल स्काईलैक्स ने 515 ई. पू. इसका वर्णन किया है । इस स्थान का प्राचीन नाम कश्यपपुर था । दसवीं सदी में अल्बरूनी ने भी इसका उल्लेख किया है । 1026 ई. में महमूद गजनी ने इस मन्दिर को ध्वस्त कर दिया । इसके अतिरिक्त दो और सूर्य मन्दिर हैं जिनकी प्रामाणिक व्याख्या की गई है । ओडिशा का कोणार्क सूर्य मन्दिर और बिहार का देव सूर्य मन्दिर । जंबूद्वीप में ये तीन ऐसे स्थान हैं जहाँ सूर्य की सर्वप्रथम किरण पहुँचती है । प्राचीन काल में देव को इन्द्रवन, कोणार्क को मित्रवन तथा मुल्तान को मुंडिरवन के रूप में जाना जाता था । देव का सूर्य मन्दिर विश्व का एकमात्र पश्चिमाभिमुख सूर्य मन्दिर है । स्थापत्य कला का बेजोड़ उदाहरण है यह मंदिर, बिहार के औरंगाबाद से 18 कि०मी० दूर और 100 फीट ऊँचा है । ऐसी मान्यता है कि भगवान विश्वकर्मा ने स्वयं इस मंदिर का निर्माण किया था, एक लाख पचास हजार तेइस वर्ष प्राचीन